

अमूल: भारत के डेयरी क्षेत्र का प्रमुख स्तंभ

प्रलिमिंस के लिये:

आनंद पैटर्न, श्वेत क्रांति, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB), [वशिव खाद्य कार्यक्रम](#), [राष्ट्रीय गोकूल मशिन](#), [राष्ट्रीय पशुधन मशिन](#)

मेन्स के लिये:

भारतीय अर्थव्यवस्था में डेयरी और पशुधन क्षेत्र की भूमिका, इस क्षेत्र से संबंधित मुद्दे और इसके संवर्द्धन के लिये की गई पहल

[स्रोत: पी.आई.बी.](#)

चर्चा में क्यों?

प्रधानमंत्री ने गुजरात सहकारी दुग्ध वपिणन महासंघ (Gujarat Cooperative Milk Marketing Federation- GCMMF) के स्वर्ण जयंती समारोह में भाग लिया और आनंद मलिक यूनियन लिमिटेड (अमूल) की सफलता पर प्रकाश डाला जो GCMMF का हिस्सा है।

अमूल का इतिहास क्या है?

- अमूल की स्थापना वर्ष 1946 में गुजरात के आनंद में कैरा डिसट्रिक्ट को-ऑपरेटिव मलिक प्रोड्यूसर्स यूनियन लिमिटेड के रूप में की गई थी।
- इसकी स्थापना त्रिभुवनदास पटेल द्वारा [मोरारजी देसाई](#) और [सरदार वल्लभभाई पटेल](#) के सहयोग से की गई थी।
- वर्ष 1950 में उक्त सहकारी द्वारा उत्पादित डेयरी उत्पादों के लिये **अमूल (आनंद मलिक यूनियन लिमिटेड)** को एक ब्रांड के रूप में गठित किया गया।
- अमूल का प्रबंधन GCMMF द्वारा किया जाता है, जिसमें गुजरात के 3.6 मिलियन से अधिक दुग्ध उत्पादकों का संयुक्त स्वामित्व है।
- अमूल ने सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से लघु उत्पादकों को सशक्त बनाने के लिये डिज़ाइन किये गए एक आर्थिक संगठनात्मक मॉडल, आनंद पैटर्न को अपनाने का बीड़ा उठाया है।
- **आनंद पैटर्न** एक आर्थिक संगठनात्मक मॉडल है जिससे अमूल ने अपना **नेतृत्व** किया। इस मॉडल का उद्देश्य **सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से लघु दुग्ध उत्पादकों को सशक्त बनाना** था।
 - यह दृष्टिकोण उत्पादकों के एकीकरण को बढ़ावा देता है और **नरिण्य करने में वैयक्तिक स्वायत्तता को संरक्षित करते हुए** बड़े पैमाने के लाभ अर्जति करने में सहायता प्रदान करता है।
- अमूल की सफलता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बन गया है जो सहकारिता अर्थशास्त्र और ग्रामीण विकास के संबंध में एक केस स्टडी के रूप में भूमिका निभा रहा है।
- अमूल ने **भारत की श्वेत क्रांति** में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य दुग्ध उत्पादन बढ़ाना तथा भारत को दुग्ध उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना था।
 - अमूल ने वर्ष 1955 में **दुग्ध पाउडर निर्माण** की शुरुआत के साथ भारत में श्वेत क्रांति में अहम भूमिका निभाई।
- 18,000 से अधिक दुग्ध सहकारी समितियों और 36,000 से अधिक किसानों के नेटवर्क के साथ, वर्तमान में अमूल उत्पादों का 50 से अधिक देशों में निर्यात किया जाता है। प्रतिदिन 3.5 करोड़ लीटर से अधिक दुग्ध का प्रसंस्करण करते हुए, अमूल ने पशुपालकों को 200 करोड़ रुपए से अधिक का ऑनलाइन भुगतान किया।

भारत की श्वेत क्रांति या ऑपरेशन फ्लड क्या है?

- **पृष्ठभूमि:**
 - **वशीस कुरियन** ('भारत में श्वेत क्रांति के जनक') की अध्यक्षता में **राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड (NDDB)** की स्थापना वर्ष 1965 में भारत के डेयरी उद्योग में क्रांतिलाने के लिये की गई थी। सफल **"आनंद पैटर्न"** से प्रेरित होकर, **NDDB** द्वारा वर्ष 1970 में **श्वेत क्रांति शुरु** की गई जिससे **ऑपरेशन फ्लड** के नाम से भी जाना जाता है, जिसमें डेयरी सहकारी समितियों के माध्यम से ग्रामीण दुग्ध उत्पादकों को शहरी उपभोक्ताओं से जोड़ा गया।

- इस पहल ने भारत को दुनिया के सबसे बड़े दुग्ध उत्पादक देश में बदल दिया, जिससे दुग्ध उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई और इसकी प्रबंधन दक्षता में भी सुधार हुआ।
- ऑपरेशन फ्लड ने डेयरी की कमी वाले राष्ट्र को दुग्ध उत्पादन में वैश्विक नेता में बदल दिया।
 - तीन दशकों से अधिक समय में देशव्यापी ऑपरेशन फ्लड तीन चरणों में चलाया गया।
- **ऑपरेशन फ्लड के चरण:**
 - **चरण-1(1970-1980):**
 - **वशिव खाद्य कार्यक्रम** के माध्यम से यूरोपीय संघ (तत्कालीन यूरोपीय आर्थिक समुदाय) द्वारा उपहार में दिये गए स्कमिड मलिक पाउडर एवं बटर ऑयल की बिक्री से वित्त पोषण किया जाता है।
 - ऑपरेशन फ्लड द्वारा उपभोक्ताओं को 18 मलिकशेडों के माध्यम से प्रमुख महानगरीय शहरों से जोड़ा गया।
 - ग्राम सहकारी समितियों की एक आत्मनिर्भर प्रणाली की नींव की शुरुआत की गई।
 - **चरण-II (1981-1985):**
 - मलिकशेडों को 18 से बढ़ाकर 136 किया गया और साथ ही 290 शहरी बाजारों में आउटलेट्स का वसितार किया गया।
 - 43,000 ग्राम सहकारी समितियों की एक आत्मनिर्भर प्रणाली स्थापित की, जिसमें 4.25 मिलियन दुग्ध उत्पादक शामिल थे।
 - आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देते हुए, घरेलू दुग्ध पाउडर उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
 - **चरण-III (1985-1996):**
 - डेयरी सहकारी समितियों को दुग्ध की खरीद और वपिणन के लिये बुनियादी ढाँचे का वसितार एवं सुदृढीकरण करने में सक्षम बनाया गया।
 - पशु चिकित्सा स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं, चारा और कृत्रिम गर्भाधान पर जोर दिया गया।
 - वर्ष 1988-89 में 30,000 नई डेयरी सहकारी समितियाँ जोड़ी गईं और साथ ही मलिकशेडों की संख्या 173 तक पहुँच गई।
- **ऑपरेशन के बाद बाद:**
 - वर्ष 1991 में भारत में **उदारीकरण, नजीकरण तथा वैश्वीकरण** सुधार हुए, जिससे डेयरी सहित विभिन्न क्षेत्रों में नजी भागीदारी की अनुमति प्राप्त हुई।
 - माल्टेड उत्पादों को छोड़कर, **दुग्ध उत्पादों में 51% तक की वदेशी हसिसेदारी की अनुमति** दी गई थी।
 - प्रारंभिक चरण में अनियमित डेयरियों का प्रसार देखा गया, जिसके परिणामस्वरूप मलावटी एवं दूषित दुग्ध वितरण को लेकर समस्या बढ़ी थी।
 - इस क्षेत्र को नियमित करने के साथ-साथ नगिरानी करने के लिये वर्ष 1992 में **दुग्ध एवं दुग्ध उत्पाद ऑर्डर (MMPO) की स्थापना** की गई थी।
 - **MMPO**, भारत सरकार का एक नियामक आदेश है जो दुग्ध और दुग्ध उत्पादों के उत्पादन, आपूर्ति एवं वितरण को नियंत्रित करता है। **MMPO** को **आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955** के प्रावधानों के तहत प्रख्यापित किया गया था।
 - इसका उद्देश्य दुग्ध और दुग्ध उत्पादों की आपूर्तिको बनाए रखने के साथ-साथ उसमें वृद्धि करना है।
 - मुख्य रूप से बड़े नजी अभिक रत्ताओं द्वारा संचालित इस उद्योग की प्रसंस्करण क्षमता में बीते कुछ वर्षों में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है।
- **दुग्ध उत्पादन की वर्तमान स्थिति:**
 - वैश्विक दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से **भारत सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक है**, वर्ष 2021-22 में चौबीस प्रतिशत योगदान के साथ विश्व में पहले स्थान पर है।
 - वगित 10 वर्षों में दुग्ध उत्पादन में लगभग 60% की वृद्धि हुई है और प्रतिव्यक्ति दुग्ध की उपलब्धता लगभग 40% बढ़ी है।
 - शीर्ष 5 दुग्ध उत्पादक राज्य राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात और आंध्र प्रदेश हैं।
 - वैश्विक औसत 2% की तुलना में भारतीय डेयरी क्षेत्र में प्रतिवर्ष 6% की दर से वृद्धि हो रही है।
 - वर्ष 2022-23 के दौरान भारत का डेयरी उत्पादों का निर्यात विश्व भर में 67,572.99 मीट्रिक टन था, जिसका मूल्य 284.65 मिलियन अमेरिकी डॉलर था।

डेयरी क्षेत्र से संबंधित पहल क्या हैं?

- [पशुपालन अवसंरचना विकास नधि](#)
- [डेयरी विकास के लिये राष्ट्रीय कार्यक्रम](#)
- [प्रधानमंत्री किसान समपदा योजना](#)
- [पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड](#)
- [राष्ट्रीय गोकुल मशिन](#)
- [राष्ट्रीय पशुधन मशिन](#)

भारतीय डेयरी क्षेत्र के सामने क्या चुनौतियाँ हैं?

- **दुग्ध उत्पादन में कमी:**
 - भारत में **प्रतिपशु दुग्ध उत्पादन वैश्विक औसत से काफी कम** है। इसके लिये खराब गुणवत्ता वाले चारे, पारंपरिक मवेशी नस्लों और उचित पशु चिकित्सा देखभाल की कमी जैसे कारकों को ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है।
- **दुग्ध संग्रहण और प्रसंस्करण में मुद्दे:**
 - दुग्ध के संग्रहण, पासचुरीकरण और परिवहन में चुनौतियाँ महत्वपूर्ण बाधाएँ पैदा करती हैं, विशेष रूप से अनौपचारिक डेयरी सेटअप में सुरक्षित दुग्ध प्रबंधन सुनिश्चित करने में।

- दुग्ध के संग्रहण, पास्चुरीकरण और परविहन में चुनौतियाँ, विशेष रूप से अनोपचारिक डेयरी सेटअपों में सुरक्षित दुग्ध प्रबंधन सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण बाधाएँ उत्पन्न करती हैं।
- मलिवट संबंधी चर्चाएँ:
 - गुणवत्ता नियंत्रण में कठिनाइयों के कारण दुग्ध में मलिवट एक लगातार समस्या बनी हुई है।
- लाभ असमानताएँ:
 - दुग्ध उत्पादकों को अक्सर बाजार दरों की तुलना में कम खरीद मूल्य मिलता है, जिससे मूल्य शृंखला के भीतर लाभ वितरण में असमानताएँ पैदा होती हैं।
- मवेशी स्वास्थ्य चुनौतियाँ:
 - **खुरपका और मुँहपका रोग**, ब्लैक क्वार्टर संक्रमण तथा इन्फ्लुएंजा जैसी बीमारियों का बार-बार फैलने से पशुधन के स्वास्थ्य एवं कम उत्पादकता पर काफी प्रभाव पड़ता है।
- सीमिति कर्सबरीडिंग सफलता:
 - आनुवंशिक क्षमता में सुधार के लिये विदेशी प्रजातियों के साथ स्वदेशी प्रजातियों को कर्सबरीडिंग करने से सीमिति सफलता मिली है।

आगे की राह

- उत्पादकता और स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिये पशु चिकित्सा देखभाल को सुदृढ़ करना, गुणवत्तापूर्ण आहार तथा चारे को सुनिश्चित करना एवं मज़बूत गुणवत्ता नियंत्रण उपायों को लागू करना आवश्यक है।
- दुग्ध संग्रहण, प्रसंस्करण और परविहन के लिये बुनियादी ढाँचे को बढ़ाने से परिचालन को सुव्यवस्थित करने एवं सुरक्षित दुग्ध प्रबंधन सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।
- पशु स्वास्थ्य और दुग्ध-उत्पादन को बढ़ाने के लिये आनुवंशिकी, पोषण व रोग प्रबंधन में अनुसंधान एवं विकास पर जोर देना महत्त्वपूर्ण होगा।
- किसान सहकारी समितियों को बढ़ावा देना और संधारणीय प्रथाओं को प्रोत्साहित करना छोटे पैमाने के उत्पादकों को सशक्त बना सकता है तथा डेयरी मूल्य शृंखला में समान विकास सुनिश्चित कर सकता है।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????:

Q.1 भारत की नमिनलखिति फसलों पर वचिर कीजयि: (2012)

1. लोबयि
2. मूंग
3. अरहर

उपर्युक्त में से कौन-सा/से दलहन उपयोग दलहन, चारा और हरी खाद के रूप में प्रयोग होता है/होते हैं?

- (a) केवल 1 और 2
- (b) केवल 2
- (c) केवल 1 और 3
- (d) 1, 2 और 3

उत्तर: (a)

??????:

Q.1 पशुधन पालन में ग्रामीण क्षेत्रों में कृषीतर रोजगार और आय का प्रबंध करने में पशुधन पालन की बड़ी संभाव्यता है। भारत में इस क्षेत्रक की प्रोन्नतिकरने के उपयुक्त उपाय सुझाते हुए चर्चा कीजयि। (2015)

Q.2 हाल के वर्षों में सहकारी परसिंघवाद की संकल्पना पर अधिकाधिक बल दिया जाता रहा है। वदियमान संरचनाओं में असुवधियों और सहकारी परसिंघवाद कसि सीमा तक इन सुवधियों का हल नकाल लेगा, इस पर प्रकाश डालयि। (2015)